त्वयैव चिन्त्यमानस्य गुरुणा ब्रह्मयोनिना ।

सानुबन्धाः कथं न स्युः संपदो मे निरापदः ।।64।।

अन्वय ब्रह्मयोनिना गुरुणा त्वया एव चिन्त्यमानस्य निरापदः मे सम्पदः सानुबन्धाः कथं न स्युः।

अनुवाद ब्रह्मा से जन्म लेने वाले आप जैसे गुरु मेरी इस प्रकार देखभाल करने के कारण (और इसी कारण से) विपत्तियों से मुक्त हुई मेरी (मुझ दिलीप की) सम्पतियाँ सदा अविच्छिन्न (निरन्तर) क्यों न बनी रहेंगी।

टिप्पणियाँ

ब्रह्मयोनिना ब्रह्मा योनिः यस्य सः (बहुव्रीहि) तेन, जिसका जन्म ब्रह्मा से है। ब्रह्मा के दस मानस पुत्रों में से एक वसिष्ठ हैं।

चिन्त्यमानस्य चिन्त् कर्मणि शानच्, षष्ठी विभक्ति, एकवचन। (मेरी) देखभाल किये जाने पर। आप जब मेरा ध्यान रखने वाले हैं।

सानुबन्धाः अनुबन्मयते इति अनुबन्धः, अनुबन्ध् घञ्। अनुबन्धेन (अविच्छिन्न) सह वर्तमाना इति सानुबन्धाः, (बहुव्रीहि)। निरन्तर बने रहने वाली, 'संपदः' का विशेषण। मेरी सम्पत्तियाँ अविच्छिन्न क्यों न बनी रहें (जब ब्रह्मा के पुत्र आप जैसे गुरु मेरी परवाह करते हैं)।

स्युः अस् लिङ्, अन्यपुरुष, बहुवचन।

निरापदः निर्गताः आपद् यस्मात् स निरापद् तस्य (बहुव्रीहि); 'मे' का विशेषण। आपत्तियों से रहित।